6. भारत में कपड़ा उद्योग का इतिहास

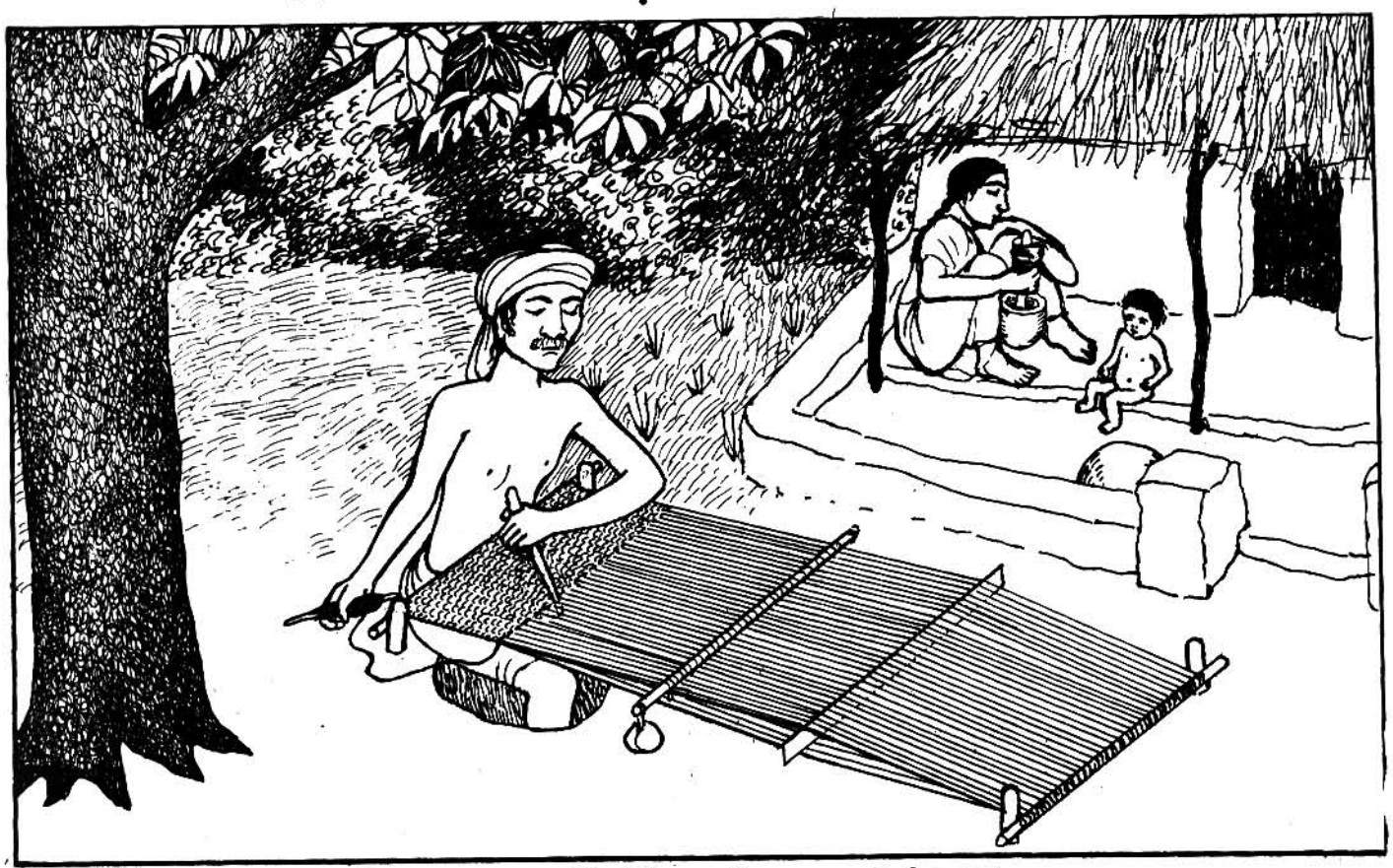

तुमने चीज़ों के उत्पादन के अलग-अलग तरीके देखे - कहीं कारीगर अपने घर पर अपने औज़ारों से चीज़ें बनाता है और उन्हें खुद बेचता है, कहीं वह दलालों के लिए काम करता है, तो कहीं और कारखानों में मज़दूरी द्वारा उत्पादन किया जाता है। इस पाठ में हम कपड़े उद्योग के उदाहरण से समझेंगे कि उत्पादन करने के तरीकों में बदलाव भी आते हैं और कुछ पुराने तरीके भी बने रहते हैं।

भारत में बहुत पुराने समय से बुनकर कपड़ा बुनते आए हैं। कपड़ा बनाने का सारा काम बुनकर के घर पर उसके परिवार के लोग मिल कर करते थे। वे रूई धुनकते, पोनी बनाते और अपनी तकली या चरखे पर सूत कातते थे। रूई तो बुनकर किसानों से खरीद लेता था। बुनकर अपने करघे पर सूत से कपड़ा बुन लेता था। बुने हुए कपड़े को रंग में डाल कर रंगा जाता था। यह काम भी बुनकर के घर पर ही होता था।

बुनकर और उसके परिवार के लोग अपनी सुविधा के अनुसार काम करने का समय तय करते। जब गर्मी तेज़ हो जाती तो सूखी गर्मी में धागा टूटने लगता और काम रोकना पड़ता था। कोई और काम पड़ने पर, जैसे जब बाज़ार जाना पड़े, वे बुनने का काम रोक सकते थे। कपड़ा तैयार हो जाने पर बुनकर उसे शहर के बाज़ार या गांव में लगने वाले हाटों में बेच आता था। जहां भी उसे अच्छी कीमत मिले वहां वह अपना माल बेच कर अपना व परिवार का खर्च चलाता था।

बुनकर के घर पर क्या-क्या काम होता था?
उसे कपास/रुई कैसे मिलती थी?
चरखा, करघा आदि औज़ार किसके थे?
वह अपने द्वारा बनाए गए कपड़े का क्या करता था?

कपड़े की मांग बढ़ी - उत्पादन कैसे बढ़ाएं?

कई बुनकर साधारण लोगों के लिए रोज़ के उपयोग का मोटा कपड़ा बनाते थे। कुछ बुनकर बहुत अच्छे किस्म का कपड़ा बनाने में कुशल हो गए थे। अमीर लोग तरह-तरह के सुन्दर डिज़ाईनों में अच्छे किस्म का कपड़ा चाहने लगे थे। अमीरों को रंगीन, हल्के ज़री वाले कपड़े पसन्द आते थे। भारत के बुनकर इन मांगों को पूरा करते-करते इतने कुशल हो गए कि उनका यश देश-विदेश में फैलने लगा था। चीन, ईरान, अरब, अफ्रीका के अमीर लोग भारतीय कपड़ा खूब पसन्द करते थे। कई व्यापारी यहां का कपड़ा इन दूर देशों में बेच आते थे और खूब मुनाफा कमाते थे।

जब कपड़ों के लिए देश-विदेश में मांग बढ़ी तो बुनकरों के सामने कई समस्याएं आयीं। अब भी कपड़ा बनाने का सब काम बुनकरों के घर पर ही होता था। जब कपड़ा तैयार हो जाए तो उसे बेचने के लिए बाज़ार भी ले जाना पड़ता था। ऐसी स्थिति में पूरी मेहनत करने पर भी वे कपड़े का उत्पादन अधिक नहीं कर पा रहे थे।

अब वे क्या कर सकते थे? क्या तुम कुछ उपाय सुझा सकते हो?

चलो देखते हैं उस समय के बुनकरों ने इस मुश्किल को दूर करन क लिए क्या-क्या किया।

बुनकरों की बस्तियां और गांव

सन् 1200 के बाद कुछ खास गांव या शहरों में खूब सारे बुनकर आकर इकट्ठे रहने लगे। अब तक तो शहरों में थोड़े बहुत बुनकर ही रहते थे। अब सैकड़ों हज़ारों बुनकरों की बस्तियां कुछ शहरों में बनने लगीं। ऐसे कुछ शहर थे: कांचीपुरम (तमिलनाडु), खम्बात (गुजरात), देवगिरी (महाराष्ट्र), बनारस (उत्तर प्रदेश)।

ऐसे बस्तियों में रहकर बुनकरों को क्या फायदा हुआ होगा?

इन जगहों पर बड़े बाज़ार होते थे जहां चीज़ें बेचने खरीदने में काफी सहूलियत होती थी। अब इन बुनकरों को दूर के बाज़ार व हाट में नहीं जाना पड़ता। अपने ही शहर में आसानी से कपड़ा बेच सकते थे। इस तरह कई शहरों व गांवों में बुनकरों के मोहल्ले बनने लगे।

इससे कपड़े के व्यापारियों को क्या लाभ हुआ होगा ?

कपड़ा बनाने का काम कई भागों में बंटा

दूसरा बदलाव यह हुआ कि अब बुनकरों के घरों में सूत बनना बंद होने लगा। कपड़े की मांग बहुत थी, इस

बुनकरों की बस्ती

लिए बुनकरों के पास बहुत काम था। इस कारण बुनकरों का पूरा परिवार अब बुनने के काम में ही मदद करता।

अब उन्हें सूत कहां से मिलता था? क्या सूत लाने उन्हें गांव-गांव भटकना पड़ता था? नहीं। सूत की इस बढ़ती हुई मांग को देखकर, गांव व शहरों के कई लोगों ने सोचा, क्यों न हम और काम छोड़कर केवल सूत ही कातें? ऐसे लोग खेती-बाड़ी या दूसरे उद्योग धंधे छोड़-छाड़ कर केवल सूत कातने का काम करने लगे। ये लोग भी बुनकर मोहल्लों के आस-पास आकर बस गए थे। ये लोग बाज़ार से रुई खरीदते थे और अपने चरखे पर कात कर बुनकरों को बेचते थे।

शुरू में सूत कातने वाले खुद रुई की सफाई, धुनाई करते थे। मगर धीरे-धीरे इन कामों को करने वाले भी अलग हो गए। कोई अपने यंत्र से रुई साफ करता तो कोई धुनकी या तांत से उसे धुनकता। ये लोग पिंजारे और धुनकर कहलाते हैं।

धीरे-धीरे कपड़े बनाने का काम अलग-अलग परिवारों में होने लगा। कपास की सफाई, धुनकना, रंगना, छापना, धुलाई, कलफ लगाना ये सारे काम पहले बुनकर खुद करते थे। अब हर काम के लिए अलग दस्तकार हो गए। इस तरह बुनकरों के शहरों में बसने से कई बदलाव आए।

जब बुनकरों की बस्तियां बन गईं तब :–

बुनकर के घर पर क्या-क्या काम होने लगा?

सूत उसे कहां से मिलता था?

तुमने पिछले पाठों में दस्तकार के काम के बारे में पढ़ा। बुनकर को दस्तकार क्यों कहा जाता है?

बुनकर के परिवार के अलावा कपड़ा बनाने के काम में कौन-कौन लोग लगे थे?

बस्तियों के बसने से बुनकर के काम में क्या मुख्य बदलाव आया?

दादन प्रथा

सन् 1500 के बाद यूरोप के कई देशों से व्यापा भारत के कपड़े खरीदने आने लगे। यूरोप के अला अफ्रीका, अरब, ईरान, चीन, इन्डोनेशिया आदि देशों भी इन कपड़ों की खूब मांग थी। इस तरह कपड़ों की म खूब बढ़ी।

दलाल बुनकर से कपड़ा लेते हुए

दलाल व्यापारी को कपड़ा देते हुए

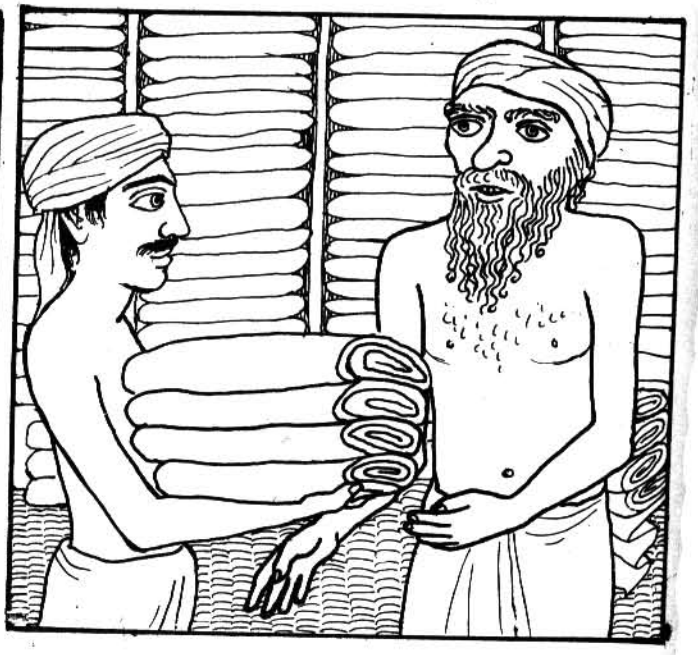

दूर के शहरों में कपड़ा पहुंचाता था व्यापारी। इसलिए व्यापारी को ही पता रहता कि कौन से कपड़े की मांग कहां पर कितनी है। बुनकर को यह सब नहीं पता रहता था। इससे बुनकर के सामने एक समस्या खड़ी हो जाती। मान लो एक बुनकर ने एक खास तरह का कपड़ा काफी मात्रा में बुन लिया और वह बिका नहीं तो वह तो भूखा मर जायेगा। बुनकर को भला कैसे मालूम पड़ता कि कहां किस चीज़ की मांग है।

व्यापारी कई गांवों और शहरों के बुनकरों से कपड़ा खरीदते और बंदरगाहों में जहाज़ पर लदवाकर दूसरे शहरों में भेज देते। पर एक व्यापारी इतने शहरों में स्वयं जाकर तो कपड़ा इकट्ठा नहीं कर सकता था। इस समस्या का हल कुछ हद तक दादन प्रथा के ज़रिए निकाला।

बुनकरों से कपड़ा खरीदने के लिए व्यापारी कई दलाल रखने लगे थे। व्यापारी दलाल को पैसे देते थे। दलाल इन पैसों से अलग-अलग बुनकरों द्वारा बनाया गया कपड़ा खरीदते थे। यह कपड़ा खरीदकर वे व्यापारी को देते थे। इस काम के लिए व्यापारी दलाल को अलग से हिस्सा देता था। दलाल जितना अधिक माल व्यापारी के लिए खरीदता, व्यापारी उसे उतने ही अधिक पैसे देता था।

तुमने पिछले पाठों में क्या इस प्रकार की व्यवस्था के बारे में पढ़ा? किस पाठ में और किस के बारे में?

व्यापारियों के सामने भी समस्या थी। देश विदेश के व्यापारियों के बीच कपड़ा खरीदने की होड़ लगी रहती थी। हर एक व्यापारी चाहता था कि उसे अधिक से अधिक कपड़ा खरीदने व बेचने को मिले। हरेक चाहता था कि किसी प्रकार बुनकर को बांध दे ताकि वह अपना माल दूसरे व्यापारियों को न बेचे, उसे ही बेचे।

व्यापारी का दलाल बुनकरों के पास जाता और कहता, "भाई मुझे इस डिज़ाइन के कपड़े इतने सारे चाहिए। तुम हमसे इतने रुपये एडवांस ले लो। जब कपड़ा बुन जाये तो हमें ही वह कपड़ा देना किसी दूसरे को नहीं। तब हम तुम्हें बकाया पैसा देंगे।"

इसी प्रथा को दादन प्रथा कहते हैं। दादन प्रथा में बुनकर को कपड़ा बुनने के लिए सूत आदि कच्चे माल के पैसे दलाल से पहले ही मिल जाते थे।

व्यापारियों ने अलग-अलग गांवों और शहरों में बसे कारीगरों से कपड़ा खरीदने का क्या प्रबन्ध किया था?

एक तरफ बुनकरों को इससे फायदा भी था। उन्हें अब कपड़ा बुनने से पहले ही उसकी कीमत का कुछ हिस्सा मिल जाता था। इससे वे सूत और अन्य ज़रूरी चीज़ें खरीद सकते थे। साथ ही कपड़ा बेचने के सिरदर्द से भी वे बच सकते थे। उन्हें पहले से पता भी रहता था कि उन्हें किस तरह का कपड़ा बुनना है और कितना बुनना है।

पर दूसरी तरफ अब वे खुद निर्णय नहीं ले सकते थे कि वे क्या बनाएंगे और कितना। अब कपड़ों का डिज़ाईन और उनकी मात्रा व्यापारी ही तय करने लगा। कपड़े की कीमत तय करने में भी व्यापारी का हाथ बढ़ने लगा। चूँकि दलाल और व्यापारी चाहते थे कि उनका मुनाफा कम न हो, वे कोशिश करते कि बुनकर को कम से कम पैसे मिलें।

व्यापारी जहाज़ पर कपड़ा लदवा रहा है

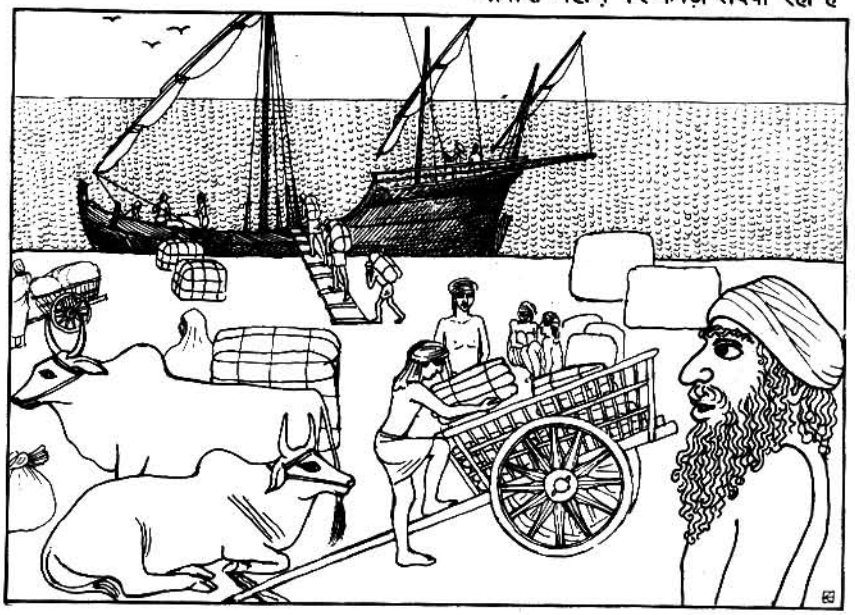

कई जगह, खासकर बंगाल में, उस समय की सरकार की मदद से व्यापारी बुनकरों के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती करने लगे। अगर बुनकर अपना बना हुआ कपड़ा किसी दूसरे व्यापारी को बेच देता या निर्धारित समय तक बनाकर नहीं देता तो उसे दंड भी दिया जाता था। इस तरह दादन प्रथा से बुनकरों की आमदनी कम होने लगी थी। सन् 1700 तक आते-आते हम देखते हैं कि बुनकरों की काफी बुरी दशा हो गई थी। उन्हें अपने रोज़ाना के भोजन पानी के लिए भी उधार लेना पड़ रहा था।

दादन प्रथा किस प्रकार शुरू हुई, समझाओ?

बुनकरों के काम के तरीके पर दादन प्रथा के कारण क्या बदलाव आया।?

सही विकल्प चुनकर खाली स्थान भरो :

दादन प्रथा में –

1. कपड़ा बुनने से पहले व्यापारी बुनकर को ——— (एडवांस नहीं देता था/देता था)।

2. बुने हुए कपड़े को बुनकर बाज़ार में ——— (किसी को भी बेच सकता था/ केवल एडवांस देने वाले को बेच सकता था)।

3. सूत और अन्य कच्चा माल ——— (व्यापारी देता था/बुनकर खुद खरीदता था)।

4. करघा और अन्य औज़ार ——— (बुनकर के अपने होते थे/व्यापारी के होते थे)।

5. कितना और कैसा कपड़ा बनाना है यह ——— (व्यापारी / बुनकर खुद)तय करता था।

भारत में कपड़ा मिलों की शुरुआत

1725 के लगभग 300 लाख गज़ कपड़ा भारत से बनकर यूरोप जाता था पर आश्चर्य की बात है कि 100 साल बाद सन् 1850 तक आते-आते यह व्यापार नहीं रहा। ऐसा क्यों हुआ?

सन् 1700 और 1800 के बीच जब भारत में दादन प्रथा चल रही थी, यूरोप में कपड़े की बड़ी-बड़ी मिलें लगना शुरू हो गई थीं। अंग्रेज़ भारत से रूई खरीदकर अपने देश के मिलों में कपड़ा बुनकर दुनिया भर मे बेचते थे। उन्हीं दिनों भारत पर भी अंग्रेज़ो का शासन हो गया था। मिलों में बने कपड़े बहुत सस्ते होते थे, इसलिए भारत में भी बहुत लोग उसी को खरीदने लगे। बुनकरों के कपड़े खरीदने वाले बहुत कम हो गए। इसलिए बुनकरों का धंधा बंद होने लगा।

इतने में भारत के कई सेठों ने सोचा- क्यों न हम भी अंग्रेज़ों की तरह अपने देश में कारखाने लगायें?

कारखाने लगाने के लिए उन्हें क्या-क्या ज़रूरी था?

1. ज़मीन

2.

3.

4.

इन सब के लिए धन की ज़रूरत थी। कोई भी साधारण बुनकर या कारीगर कहां से इतना पैसा जुटा सकता था! इतने पैसे तो बड़े व्यापारियों और साहूकारों के पास ही थे।

बम्बई की सबसे पहली कपड़ा मिल 1854 में सी. एन. डावर ने लगाई थी। सेठ रणछोड़लाल छोटालाल ने सन् 1861 में अहमदाबाद में पहली सूत कातने की मिल लगवाई। मशीनें उसे इंग्लैंड से मंगवानी पड़ीं। मिल लगवाने के लिए उसने कई और सेठों से पैसे उधार मांगकर जुटाये। 1867 में उसी मिल में नई मशीनों से बुनने का काम भी शुरू हुआ।

इसके बाद धीरे-धीरे बम्बई (महाराष्ट्र), अहमदाबाद (गुजरात), मद्रास (तमिलनाडु), इन्दौर (मध्यप्रदेश) जैसी जगहों पर कपड़ा मिलें लगने लगीं। इन मिलों में करघों पर काम नहीं होता था। इन में सूत कातने और कपड़ा बुनने की कई मशीनें लगाई गईं। ये मशीनें भाप और बाद में बिजली के इंजन से चलाई जातीं, जिस तरह से यूरोप की मिलों में मशीनें चलती थीं।

मिलों के अन्दर काम

मालिक कपास की मंडियों से खूब सारा कपास खरीदकर अपने गोदाम में भरकर रखता। मिलों में कपास साफ करने, रुई धुनने, उसका सूत बनाने और कपड़ा बुनने की मशीनें थीं। कुछ मज़दूर रुई साफ करने की मशीनों पर काम करते तो कुछ उसे धुनने की मशीनों पर काम करते। कुछ सूत कातने की मशीनों पर तो कुछ कपड़ा बुनने की मशीनों पर काम करते थे।

मशीनों से जब कपड़ा बनने लगा तो बुनकरों द्वारा बनाए गए कपड़ों की मांग और घट गई। इस कारण कई बुनकरों को बुनने का काम ही छोड़ना पड़ा। यही हालत सूत कातने वालों की भी थी। अब यही लोग कपड़ा मिलों में मज़दूर बन कर काम करने लगे। साथ ही कई गरीब किसान जिनका गुज़ारा खेती से नहीं हो पा रहा था, वे भी मिलों में काम करने आए।

मिलों में जो मज़दूर काम करते थे उन्हें मालिक नियमित वेतन देता था। इसके बदले में उन्हें रोज़ नियमित समय पर काम पर आना पड़ता था और जो काम बताया गया उसे करना पड़ता था। अब वे खुद से यह तय नहीं कर सकते थे कि वे कब, कैसे और कितने समय तक काम करेंगे।

मज़दूरों को सुबह से शाम 12-14 घंटे तक काम करना पड़ता था। जब थक जाएं तो अपनी मर्ज़ी से काम रोक भी नहीं सकते थे। उनके काम की देख-रेख के लिए एक सुपरवाइज़र होता था जिसका काम था यह ध्यान रखना कि सब मज़दूर ठीक से काम कर रहे हैं कि नहीं। मशीनें तेज़ रफ्तार से काम करती थीं। मज़दूरों को उनके साथ उनकी गति से काम करना पड़ता था। तभी कम समय में ढेर सारा कपड़ा बन सकता था। आज भी इसी तरह से मिलों में काम होता है। हालांकि अब कानून के अनुसार

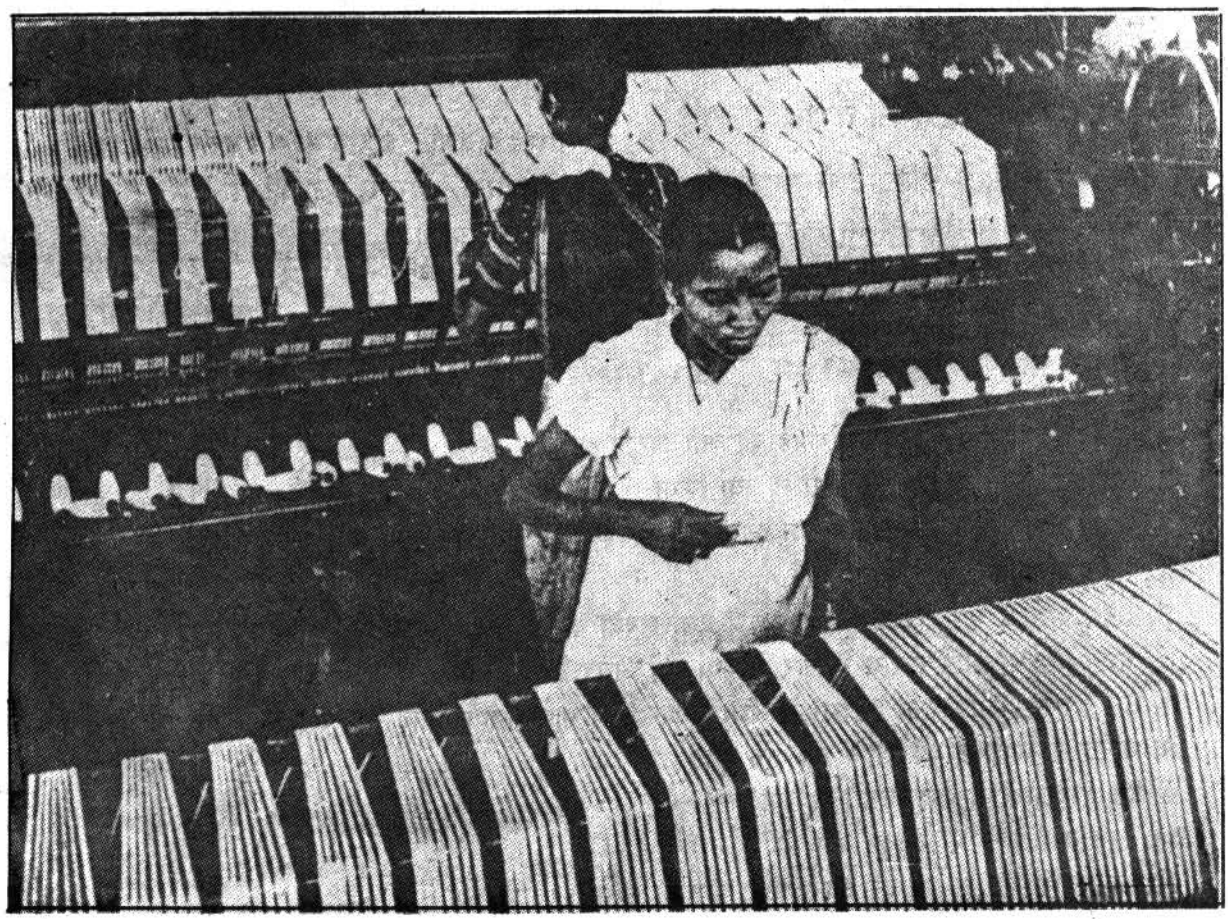

दिन में 8 घंटों से अधिक काम नहीं कराया जा सकता है। मिलों में बना कपड़ा मिल-मालिकों द्वारा बेचा जाता है। कपड़ों का दाम वे ही तय करते हैं और जो मुनाफा होता है उसे वे ही रखते हैं।

खाली स्थान भरो :-

1. पहले जब कपड़ा करघे पर बनाया जाता था तो करघा कपड़ा बनाने वालों का अपना था। मगर जब मिलों में कपड़ा बनने लगा तो मशीनें ———— (मालिक/ मज़दूर) की होने लगीं।

2. पहले रूई जैसा कच्चा माल बुनकर खरीदता था जबकि मिलों में कच्चा माल ———— खरीदता है।

3. पहले ———— कपड़ा बेचता था जबकि अब ———— कपड़ा बेचता है।

4. पहले कारीगर का खर्चा कपड़ा बेचने से निकलता था जबकि मिल मज़दूरों का खर्चा ———— से निकलता है।

उत्पादन करने के अलग-अलग तरीके

तुम ने कपड़ा उद्योग के इतिहास से समझा कि एक ही चीज़ (कपड़े) बनाने के तरीके किस प्रकार बदले। पहले बुनकर घर पर काम करके स्वयं कपड़ा बेचता था। फिर बुनकरों की बस्तियां और शहर बने। फिर दादन प्रथा का चलन हुआ। और फिर कपड़े की मिलें शुरू हुईं।

आज भी अलग-अलग उद्योग अलग-अलग तरह से काम करते हैं। तुम ने इन के कुछ उदाहरण पढ़े। कसेरा-एक स्वतंत्र दस्तकार है। बीड़ी में दादन की सी प्रथा चलती है। चमड़े के छोटे व बड़े कारखानों में तुम ने मज़दूर काम करते हुए देखे। यही नहीं एक ही वस्तु कई तरह से बनाई जाती है। कपड़े की मिलों के बनने के बाद भी, कई जगहों पर बुनकर घर पर भी काम करते हैं। व्यापारी उन से दादन पर कपड़ा बनवाते हैं। या फिर कई बुनकर ही मिल कर अपना माल बेचने का प्रबंध करते हैं। इसी तरह लोहे की चीज़ें लोहार घर पर भी बना रहा है और लोहे की चीज़ें बनाने के कारखाने भी हैं।

अपने आस-पास बन रही चीज़ों के बारे में पता करो। वे कारखाने में बनती हैं या दादन से या स्वतंत्र दस्तकार द्वारा?

इन वस्तुओं के बारे में भी पता करो- मटके, कपड़े, कागज़, किताबें, अखबार, तेल, ईंट, हल-बक्खर, कुर्सी, टेबिल, बीड़ी, माचिस।

अभ्यास के प्रश्न

1. शुरू में बुनकर अपने बनाए कपड़े का क्या करता था?
2. उत्पादन बढ़ाने के लिए बुनकरों ने क्या किया ?
3. कपड़ा बनाने के काम में क्या-क्या काम होते हैं? इन्हें अलग-अलग लोग क्यों करने लगे?
4. दादन प्रथा किसे कहा जाता था?
5. दादन प्रथा में व्यापारी क्या करता था? दलाल क्या करता था?
6. दादन प्रथा में और स्वतंत्र बुनकर में क्या-क्या अंतर है?
7. सन् 1750 और सन् 1850 के बीच बुनकरों की हालत क्यों बिगड़ गई थी?
8. भारत में कपड़े के कारखाने कब शुरु हुए?
9. इन कारखानों में धन किसने लगाया था?
10. इन कारखानों में मज़दूर कौन थे?
11. कारखानों में काम करने और दादन प्रथा से काम करने में क्या अन्तर हैं?